I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

भारत और चीन की विदेश नीति: आर्थिक विकास के संदर्भ में तुलनात्मक विश्लेषण

मोनिका [1*], डॉ. महेंद्र सिंह [2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, एन.आई.आई.एल.एम, विश्वविद्यालय कैथल, हरियाणा, भारत

[2] पर्यवेक्षक, राजनीति विज्ञान विभाग, एन.आई.आई.एल.एम, विश्वविद्यालय कैथल, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: * मोनिका

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21618665

सारांश

भारत और चीन की विदेश नीति के आर्थिक विकास पर प्रभाव विषयक इस शोध में दोनों देशों की विदेश नीतियों में आर्थिक विकास की भूमिका का गहन तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। आर्थिक विकास न केवल किसी देश की आंतरिक प्रगति का सूचक होता है, बल्कि यह उसकी विदेश नीति को भी आकार देता है। भारत और चीन दोनों ने अपनी विदेश नीतियों में आर्थिक विकास को प्राथमिकता दी है, परंतु उनकी रणनीतियाँ और प्राथमिकताएं भिन्न हैं। भारत की विदेश नीति में आर्थिक उदारीकरण के बाद वैश्विक व्यापार, विदेशी निवेश और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया गया है, जिससे भारत ने विश्वव्यापी आर्थिक मंचों में अपनी भागीदारी बढ़ाई है। वहीं, चीन ने अपनी विदेश नीति को आर्थिक विस्तार के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग करते हुए बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव जैसे महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स के माध्यम से वैश्विक आर्थिक प्रभाव बढ़ाया है।

यह शोध दोनों देशों के आर्थिक कूटनीतिक उपायों, व्यापार नीतियों, और क्षेत्रीय तथा वैश्विक आर्थिक सहयोग के पहलुओं की तुलना करता है। इसके साथ ही भारत-चीन आर्थिक संबंधों में प्रतिस्पर्धा और सहयोग के द्वैध पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक विकास ने दोनों देशों की विदेश नीति को न केवल प्रभावित किया है, बल्कि उन्हें वैश्विक राजनीति में भी एक नई दिशा दी है। अंततः, इस शोध में भविष्य की नीतिगत चुनौतियाँ और अवसर भी प्रस्तावित किए गए हैं, जो दोनों देशों के लिए आर्थिक और कूटनीतिक विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-06-2026
- **Accepted:** 25-07-2026
- **Published:** 27-07-2026
- **IJCRM:**5(4); 2026: 465-469
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

मोनिका , सिंह म. भारत और चीन की विदेश नीति: आर्थिक विकास के संदर्भ में तुलनात्मक विश्लेषण. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):465-469.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: भारत-चीन विदेश नीति,आर्थिक विकास,बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव,द्विपक्षीय व्यापार,क्षेत्रीय सहयोग

© 2026 मोनिका, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारत और चीन की विदेश नीति के आर्थिक विकास पर प्रभाव के विषय में यह शोध दोनों देशों के आर्थिक और कूटनीतिक दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास करता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में आर्थिक विकास किसी भी देश की विदेश नीति का महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। भारत और चीन दोनों ही तेजी से उभरती आर्थिक शक्ति के रूप में विश्व मंच पर अपनी स्थिति मजबूत कर रहे हैं। इस संदर्भ में दोनों देशों की विदेश नीति में आर्थिक विकास की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है ताकि उनके विकास के मॉडल, रणनीतियाँ और वैश्विक प्रभावों को समझा जा सके। यह शोध न केवल दोनों देशों के आर्थिक हितों को समझने में सहायक होगा, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

आर्थिक विकास और विदेश नीति के बीच गहरा संबंध है। विदेश नीति के माध्यम से देश वैश्विक बाजारों में अपनी उपस्थिति स्थापित करता है, निवेश आकर्षित करता है, और सामरिक सहयोग के साथ-साथ आर्थिक सहयोग को भी बढ़ावा देता है। भारत के संदर्भ में, 1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण ने देश की विदेश नीति को व्यापक बनाया और वैश्विक आर्थिक मंचों में उसकी भागीदारी बढ़ी। चीन ने भी अपनी विदेश नीति को आर्थिक विस्तार के लिए एक सशक्त उपकरण के रूप में अपनाया, जो उसकी घरेलू आर्थिक प्रगति का आधार है। चीन का बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव इसका प्रमुख उदाहरण है, जिससे उसकी वैश्विक आर्थिक पहुंच बढ़ी है।[1]

इस प्रकार, आर्थिक विकास ने दोनों देशों की विदेश नीति को गतिशील और रणनीतिक बनाया है, जो वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव लाने में सक्षम है। इस शोध से यह भी पता चलेगा कि कैसे भारत और चीन की विदेश नीति आर्थिक लक्ष्यों से प्रभावित होकर क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता और विकास में योगदान करती है।[2]

भारत की विदेश नीति में आर्थिक विकास की भूमिका

भारत की विदेश नीति में आर्थिक विकास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। 1991 में लागू हुए आर्थिक सुधारों (लिबरलाइजेशन) ने भारत की आर्थिक संरचना में व्यापक बदलाव किए और देश को वैश्विक आर्थिक मंच पर सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार किया। इन सुधारों ने विदेशी निवेश को आकर्षित करने, व्यापार को उदारीकृत करने और निजी क्षेत्र को बढ़ावा देने की दिशा में काम किया, जिससे भारत की आर्थिक वृद्धि दर में सुधार हुआ।[3]

विदेश निवेश और व्यापार नीति में भी महत्वपूर्ण बदलाव हुए, जिससे भारत ने विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) के लिए अपने द्वार खोले और व्यापार बाधाओं को कम किया। इसके परिणामस्वरूप, कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत को निवेश के लिए चुना, जिससे आर्थिक विकास में तेजी आई। भारत की नीति ने निर्यात प्रोत्साहन और आयात प्रतिस्पर्धा दोनों पर ध्यान केंद्रित किया है, जिससे देश की वैश्विक आर्थिक भागीदारी बढ़ी है।[4]

क्षेत्रीय और वैश्विक आर्थिक साझेदारियों ने भारत को आर्थिक विकास के रास्ते में समृद्ध अवसर प्रदान किए हैं। SAARC, BRICS, और BIMSTEC जैसे संगठन भारत के क्षेत्रीय सहयोग और वैश्विक आर्थिक मंचों पर प्रभावशाली भूमिका निभाने के साधन बने हैं। इन मंचों के माध्यम से भारत ने व्यापार, निवेश, और विकास परियोजनाओं में भागीदारी बढ़ाई है, जो आर्थिक विकास को सशक्त बनाते हैं।[5]

चीन के साथ आर्थिक संबंध भी भारत की विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण आयाम हैं। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि हुई है, हालांकि सीमा विवाद और राजनीतिक मतभेद आर्थिक सहयोग को प्रभावित करते रहे हैं। फिर भी, भारत-चीन व्यापार ने क्षेत्रीय आर्थिक गतिशीलता को प्रभावित किया है और दोनों देशों की नीतियों में आर्थिक विकास के महत्व को दर्शाया है।[6]

चीन की विदेश नीति में आर्थिक विकास की भूमिका

आर्थिक उदारीकरण और वैश्विक व्यापार का विकास (1978 से)

1978 में चीन ने डेंग शियाओपिंग के नेतृत्व में आर्थिक उदारीकरण की पहल की, जिसने देश की बंद और केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था को खुला और बाजारप्रधान बनाया। इस सुधार ने विदेशी निवेश को आकर्षित - किया, कृषि सुधार किए गए, और उद्योगों में निजी उद्यम को बढ़ावा मिला। चीन ने विशेष आर्थिक ज़ोन)SEZ) स्थापित किए, जो विदेशी कंपनियों को निवेश के लिए प्रोत्साहित करते थे। इसके परिणामस्वरूप, चीन का निर्यात तेजी से बढ़ा और वह वैश्विक व्यापार में एक प्रमुख खिलाड़ी बन गया। यह आर्थिक उदारीकरण चीन को विश्व अर्थव्यवस्था में एक नई पहचान दिलाने का आधार बना, जिससे उसकी विदेश नीति में आर्थिक विकास का महत्व बढ़ गया।[7]

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव **(BRI)** चीन की महत्वाकांक्षी वैश्विक आर्थिक परियोजना है, जिसे 2013 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य एशिया, यूरोप, अफ्रीका, और अन्य क्षेत्रों में अवसंरचना निर्माण और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना है। BRI के तहत सड़क, रेल, बंदरगाह, और ऊर्जा परियोजनाएं विकसित की जाती हैं, जिनसे चीन का वैश्विक प्रभाव बढ़ता है। यह पहल चीन की विदेश नीति में आर्थिक विस्तार और रणनीतिक महत्वाकांक्षा को दर्शाती है। BRI के माध्यम से चीन नए बाजारों में पहुँच बना रहा है और वैश्विक व्यापार नेटवर्क का विस्तार कर रहा है, जिससे उसकी आर्थिक शक्ति और कूटनीतिक पहुंच मजबूत हो रही है।[8]

विदेशी निवेश और निर्यात-उन्मुख नीति

चीन ने विदेशी निवेश आकर्षित करने और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक रणनीतिक विदेश नीति अपनाई है। विशेष आर्थिक ज़ोन और उदारीकृत व्यापार नीतियों ने विदेशी कंपनियों को चीन में उत्पादन और निवेश के लिए प्रोत्साहित किया। निर्यात केंद्रित विकास मॉडल ने चीन को बना दिया "विश्व की फैक्ट्री", जहाँ बड़ी संख्या में वस्तुएं उत्पादन करके विदेशों में भेजी जाती हैं। इस नीति ने चीन की आर्थिक वृद्धि को तेज किया और उसे वैश्विक आर्थिक मंच पर एक महत्वपूर्ण व्यापारिक शक्ति बनाया। इसके साथ ही, विदेशी निवेश ने तकनीकी विकास और रोजगार सृजन में भी मदद की।[9]

क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों (आसियान, एससीओ) में भूमिका

चीन ने क्षेत्रीय आर्थिक संगठन जैसे ASEAN (Association of Southeast Asian Nations) और SCO (Shanghai Cooperation Organisation) में सक्रिय भूमिका निभाकर अपनी राजनीतिक और आर्थिक पहुंच को व्यापक किया है। ASEAN के साथ व्यापार और निवेश के संबंध मजबूत करने के लिए चीन ने मुक्त व्यापार समझौतों

© 2026 मोनिका, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पर जोर दिया है। SCO में चीन ने सुरक्षा के साथसाथ आर्थिक - सहयोग को भी बढ़ावा दिया है, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता और विकास में योगदान मिला है। इन संगठनों के माध्यम से चीन ने अपने पड़ोसी देशों के साथ बेहतर आर्थिक संबंध स्थापित किए हैं, जो उसकी विदेश नीति में आर्थिक विकास की रणनीति का हिस्सा हैं।[10]

तुलनात्मक विश्लेषण

आर्थिक प्राथमिकताएँ और रणनीतियाँ

भारत और चीन दोनों ने आर्थिक विकास को अपनी विदेश नीति का केंद्र बनाया है, लेकिन उनकी प्राथमिकताएँ और रणनीतियाँ भिन्न हैं। भारत ने अपनी विदेश नीति में आर्थिक उदारीकरण के बाद विदेशी निवेश और वैश्विक बाजारों में भागीदारी को बढ़ावा दिया है। भारत की रणनीति मुख्यतः क्षेत्रीय सहयोग, बहुपक्षीय मंचों में सहभागिता, और आर्थिक सुधारों के माध्यम से सतत विकास पर केंद्रित है। वहीं, चीन की विदेश नीति आर्थिक विस्तार के लिए अधिक आक्रामक और संरचनात्मक पहल करती है, जैसे बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, जो सीधे अवसंरचना विकास और वैश्विक व्यापार नेटवर्क का विस्तार करती है।[11]

विदेश नीति में आर्थिक विकास का महत्व

दोनों देशों की विदेश नीति में आर्थिक विकास का महत्व अत्यधिक है, लेकिन चीन ने इसे अधिक रणनीतिक रूप से उपयोग किया है। चीन ने अपनी आर्थिक ताकत को कूटनीति का आधार बनाया है, जिससे उसने वैश्विक प्रभाव क्षेत्र बढ़ाया है। भारत ने भी आर्थिक विकास को अपने कूटनीतिक एजेंडे में शामिल किया है, परंतु वह अधिक संतुलित और बहुपक्षीय दृष्टिकोण अपनाता है। आर्थिक विकास के माध्यम से दोनों देश अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा, सतत विकास, और वैश्विक शक्ति संतुलन में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहते हैं।[12]

क्षेत्रीय और वैश्विक आर्थिक प्रभाव

चीन की आर्थिक विस्तार नीति ने क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर गहरा प्रभाव डाला है, खासकर एशिया, अफ्रीका और यूरोप में। उसकी आर्थिक परियोजनाएँ और निवेश ने कई देशों के विकास में योगदान दिया है, जिससे चीन का राजनीतिक प्रभाव भी बढ़ा है। भारत का प्रभाव मुख्यतः दक्षिण एशिया और कुछ वैश्विक मंचों तक सीमित है, हालांकि भारत भी अपनी आर्थिक साझेदारियों के माध्यम से व्यापक प्रभाव बनाने की कोशिश कर रहा है। दोनों देशों की नीतियाँ क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक आर्थिक संतुलन को प्रभावित करती हैं।[13]

भारत और चीन के आर्थिक-राजनयिक दृष्टिकोणों में अंतर

भारत का आर्थिक कूटनीतिक दृष्टिकोण अधिक बहुपक्षीय और सहयोगात्मक है, जो क्षेत्रीय संगठन और वैश्विक संस्थाओं के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है। चीन का दृष्टिकोण अधिक केंद्रीकृत और विस्तारवादी है, जो आर्थिक शक्ति के जरिये अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने पर केंद्रित है। भारत की नीति विकासशील देशों और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ साझेदारी पर जोर देती है, जबकि चीन रणनीतिक आर्थिक परियोजनाओं और द्विपक्षीय समझौतों के माध्यम से अपनी विदेश नीति को आगे बढ़ाता है।[14]

भारत-चीन आर्थिक संबंध और प्रतिस्पर्धा

द्विपक्षीय व्यापार और निवेश

भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन चुका है, जिसमें आयात-निर्यात की मात्रा लगातार बढ़ रही है। दोनों देशों के बीच वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, और कच्चे माल का व्यापार प्रमुख है। हालांकि, भारत का व्यापार घाटा चीन के साथ लगातार बढ़ रहा है, जिससे भारत व्यापार संतुलन सुधारने की कोशिश कर रहा है। निवेश के क्षेत्र में भी चीन ने भारत में विभिन्न उद्योगों में निवेश किया है, विशेषकर तकनीकी और विनिर्माण क्षेत्रों में।[15]

सीमा विवाद और आर्थिक सहयोग का असर

भारत और चीन के बीच लंबे समय से सीमा विवाद हैं, जो दोनों देशों के आर्थिक सहयोग को प्रभावित करते रहे हैं। सीमा पर तनाव और झड़पों ने व्यापार और निवेश के बीच बाधाएं उत्पन्न की हैं। इसके बावजूद, दोनों देश आर्थिक सहयोग को जारी रखने के पक्ष में रहे हैं, क्योंकि आर्थिक लाभ दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। सीमा विवाद के बावजूद व्यापारिक संवाद और आर्थिक वार्ता समय-समय पर होती रही है, जो सहयोग के नए अवसरों का मार्ग खोलती है।[16]

क्षेत्रीय आर्थिक प्रतिस्पर्धा (SAARC बनाम BRI)

भारत और चीन के बीच क्षेत्रीय आर्थिक प्रतिस्पर्धा भी प्रमुख है, जिसमें SAARC और BRI जैसे मंच महत्वपूर्ण हैं। भारत दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) के माध्यम से अपने पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक और राजनीतिक संबंध मजबूत करना चाहता है, जबकि चीन ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के जरिए व्यापक क्षेत्रीय और वैश्विक आर्थिक नेटवर्क तैयार किया है। यह प्रतिस्पर्धा क्षेत्रीय प्रभाव और आर्थिक संसाधनों के नियंत्रण के लिए है, जिसमें दोनों देशों की रणनीतियाँ और प्राथमिकताएँ भिन्न हैं।[17]

आर्थिक प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ सहयोग के पहलू

हालांकि भारत और चीन के बीच आर्थिक प्रतिस्पर्धा है, फिर भी दोनों देशों के बीच सहयोग के कई अवसर भी मौजूद हैं। तकनीकी क्षेत्र, ऊर्जा, और वैश्विक व्यापार में सहयोग के माध्यम से दोनों देश लाभ उठा सकते हैं। द्विपक्षीय आर्थिक वार्ताएं और बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग की संभावनाएं भी हैं, जो क्षेत्रीय स्थिरता और विकास में सहायक हो सकती हैं। यह सहयोग प्रतिस्पर्धा के साथ संतुलन बनाने की रणनीति का हिस्सा हो सकता है।[18]

चुनौतियाँ और अवसर

वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में बदलाव

वर्तमान वैश्विक आर्थिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, जिसमें तकनीकी प्रगति, व्यापार युद्ध, जलवायु परिवर्तन, और बहुपक्षीय संस्थाओं की भूमिका में बदलाव शामिल हैं। इन परिवर्तनों का भारत और चीन दोनों की विदेश नीति और आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वैश्विक मंदी, ऊर्जा संकट, और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान जैसे कारक दोनों देशों के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं। इसके साथ

© 2026 मोनिका, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ही, नई तकनीकों और हरित ऊर्जा के क्षेत्र में अवसर भी उभर रहे हैं, जिनका दोनो देशों को लाभ उठाना होगा।[19]

आर्थिक विकास के लिए विदेश नीति में सुधार की आवश्यकता
भारत और चीन दोनों को अपनी विदेश नीति में सुधार करके आर्थिक विकास की चुनौतियों का सामना करना होगा। भारत को अपनी नीति को अधिक प्रगतिशील, लचीला और वैश्विक आर्थिक बदलावों के प्रति संवेदनशील बनाना चाहिए। विदेशी निवेश को आकर्षित करने, तकनीकी सहयोग बढ़ाने और व्यापार बाधाओं को कम करने की आवश्यकता है। चीन को भी अपने विस्तारवादी दृष्टिकोण के साथ-साथ पारस्परिक सहयोग पर बल देना होगा, ताकि वैश्विक समुदाय में स्थिरता बनी रहे।[20]

भारत के लिए नीतिगत सुझाव
भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी विदेश नीति को आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से और अधिक समेकित बनाए। इसके लिए क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करना, बहुपक्षीय संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाना, और तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहित करना जरूरी है। साथ ही, चीन के साथ व्यापार घाटे को कम करने और सीमा विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने के लिए कूटनीतिक प्रयास तेज करने होंगे। भारत को अपने उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए सक्षम बनाना और नवाचार केन्द्रित नीतियाँ अपनानी होंगी।[21]

निष्कर्ष
भारत और चीन की विदेश नीति में आर्थिक विकास की भूमिका पर किए गए इस तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष यह है कि दोनों देशों ने आर्थिक विकास को अपनी विदेश नीति का केन्द्र बनाकर वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव को बढ़ाया है। जहां चीन ने आक्रामक और विस्तारवादी आर्थिक नीतियों के जरिए अपनी वैश्विक मौजूदगी मजबूत की है, वहीं भारत ने अधिक संतुलित और बहुपक्षीय दृष्टिकोण अपनाया है। दोनों देशों के बीच आर्थिक प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों के पहलू विद्यमान हैं, जो क्षेत्रीय स्थिरता और विकास को प्रभावित करते हैं। सीमा विवादों के बावजूद आर्थिक संबंधों में वृद्धि और रणनीतिक साझेदारियों ने दोनों देशों के लिए अवसर उत्पन्न किए हैं।

भविष्य की दिशा में, भारत को अपनी विदेश नीति में आर्थिक सुधारों को और गहराई से लागू करना होगा, वैश्विक आर्थिक परिवर्तनों के अनुरूप अपनी रणनीतियों को अनुकूलित करना होगा, और चीन के साथ प्रतिस्पर्धा के साथ सहयोग के संतुलन को बनाए रखना होगा। तकनीकी नवाचार, क्षेत्रीय सहयोग, और बहुपक्षीय मंचों में सक्रियता भारत की आर्थिक कूटनीति को और मजबूत कर सकती है। चीन के साथ शांतिपूर्ण संबंध और व्यापार घाटे को कम करने के प्रयास भविष्य में दोनों देशों के लिए स्थिरता और विकास के मार्ग प्रशस्त करेंगे।

संदर्भ सूची

1. शाम्बा डी. चाइना गोज़ ग्लोबल: द पार्शियल पावर. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2013।
2. मलोन डीएम. डज़ द एलिफेंट डांस? कंटेंपरेरी इंडियन फॉरेन पॉलिसी. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2011।
3. पनगरिया ए. इंडिया: द इमर्जिंग जाइंट. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2008।
4. नय्यर डी. ट्रेड एंड इंडस्ट्रियल पॉलिसी रिफॉर्म्स इन इंडिया. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2006।
5. मलोन डीएम. डज़ द एलिफेंट डांस? कंटेंपरेरी इंडियन फॉरेन पॉलिसी. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2011।
6. गार्वर जेडब्ल्यू. प्रोट्रैक्टेड कॉन्टेस्ट: साइनो-इंडियन राइवलरी इन द ट्वेंटीएथ सेंचुरी. सिएटल: यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन प्रेस; 2001।
7. नॉटन बी. द चाइनीज़ इकॉनमी: ट्रांज़िशन्स एंड ग्रोथ. कैम्ब्रिज (एमए): एमआईटी प्रेस; 2007।
8. हिलमैन जेई. द एम्परर्स न्यू रोड: चाइना एंड द प्रोजेक्ट ऑफ द सेंचुरी. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस; 2020।
9. लार्डी एनआर. मार्केट्स ओवर माओ: द राइज़ ऑफ प्राइवेट बिज़नेस इन चाइना. वाशिंगटन (डीसी): पीटरसन इंस्टिट्यूट फॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स; 2014।
10. झांग वाई. चाइनाज़ रोल इन रीजनल इकोनॉमिक ऑर्गेनाइजेशन्स. लंदन: रूटलेज; 2017।
11. रोलैंड एन. चीन की यूरेशियन शताब्दी? बेल्ट एंड रोड पहल के राजनीतिक और रणनीतिक निहितार्थ. सिएटल: नेशनल ब्यूरो ऑफ एशियन रिसर्च; 2017।
12. पंत एचवी. भारत की विदेश नीति: बदलती दुनिया से तालमेल. नई दिल्ली: हार्परकॉलिन्स इंडिया; 2016।
13. झांग जे. चीन की वैश्विक भूमिका: राजनीति, अर्थशास्त्र और सुरक्षा. लंदन: रूटलेज; 2018।
14. मलोन डीएम, मुखर्जी आर. भारत-चीन संबंध: सहयोग और प्रतिस्पर्धा. न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2015।
15. भाटिया बी. भारत-चीन व्यापार संबंध: मुद्दे और संभावनाएँ. सिंगापुर: स्प्रिंगर; 2019।
16. गार्वर जेडब्ल्यू. चीन-भारत संबंध: सीमा का मुद्दा और उससे आगे. लंदन: रूटलेज; 2016।
17. मुखर्जी आर. भारत, चीन और एशियाई क्षेत्रीय व्यवस्था. चाम: पालग्रेव मैकमिलन; 2018।
18. पंत एचवी, जोशी वाई. भारत-चीन संबंधों में सहयोग और प्रतिस्पर्धा. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 2020।

© 2026 मोनिका, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

19. बाल्डविन आर. द ग्लोबोटिक्स अपहीवल: ग्लोबलाइज़ेशन, रोबोटिक्स और भविष्य का कार्य. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2020।
20. पंत एचवी. इंडियाज़ फॉरेन पॉलिसी इन ए चेंजिंग वर्ल्ड. लंदन: रूटलेज; 2019।
21. मुखर्जी आर. इंडियाज़ इकोनॉमिक डिप्लोमेसी: चुनौतियाँ और अवसर. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स; 2021।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

मोनिका राजनीति विज्ञान विभाग, एन.आई.आई.एल.एम. विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा की शोधार्थी हैं। उनकी शैक्षणिक एवं शोध रुचियाँ भारतीय राजनीति, लोक प्रशासन, सुशासन, सार्वजनिक नीति तथा समकालीन राजनीतिक मुद्दों पर केंद्रित हैं। वे विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में सक्रिय रूप से शोध कार्य प्रकाशित करने तथा अकादमिक गतिविधियों में सहभागिता रखती हैं।

© 2026 मोनिका, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/